IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

दशमहाविद्या

(स्वामिचरितचिंतामणिः के संदर्भ में)

डॉ. जया शुक्ला
अतिथि व्याख्याता
संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय
जबलपुर (म.प्र.)

सत्युग में वेद, त्रेता में स्मृतियाँ, द्वापर में पुराण एवं कलियुग (वर्तमान) में आगम तंत्र मनुष्य को दिशा निर्देश देने के लिए हैं–

'' कृते श्रुत्युक्त आचारस्त्रेतायां स्मृति सम्भवः।

द्वापरे तु पुराणो क्तः कलावागम सम्मतंः ।।''

कहा गया है कि प्रत्येक गुण का दिशा–दर्शन करने के लिए भगवान की ओर से प्रदत्त एक शास्त्र है। जिस प्रकार वेद के ज्ञान काण्ड के रहस्य के उद्घाटक उपनिषद, कर्मकाण्ड के रहस्योद्घाटक ब्राह्मण ग्रन्थ हैं उसी प्रकार वेदों के गूढ़ रहस्यों और साधनाओं के उद्घाटक आगम तंत्र है। वेदों की भांति आगम भी ईश्वर प्रसूत शब्द माने जाते हैं–

''वैदिकी तात्रिंकी चैव द्वितिधा श्रुतिर्कीतिता।''[2]

आगम, शिव, देवी, हरि या विष्णु की वाणी है तथा इन्ही के नाम से शैव आगम, शाक्त आगम एवं वैष्णव आगम प्रसिद्ध हुए। इनमें सबसे प्रसिद्ध शाक्त आगम है, जिसमें भगवती को पूजा का सर्वोच्च विषय माना गया है।

महाकवि सुधाकर शुक्ल कृत स्वामिचरित चिन्तामणिः माहाकाव्य में महाकवि की कामना है कि– ''सहायोभवताद्भूभौ महाविद्यापराक्रमः'' भूलोक में महाविद्या का पराक्रम हमारा सहयोगी बने।[3]

स्वामिचरित चिन्तामणिः महाकाव्य के पञ्दष सर्ग में दशमहाविद्याओं का वर्णन है। महाकवि श्री सुधाकर शुक्ल जी के अनुसार इस भूलोक में महाविद्याओं में दशमहाविद्याओं में से किसी को भी यदि सिद्ध कर लिया जाएगा तो वह इहलोक एवं परलोक प्रदान करती है–

''आसाङ्काऽपिसिद्धा चेल्लोकपरलोकदायिनी।

सद्यः फलप्रदाः सर्वाः महाविद्याः सुसाधिताः।।''[4]

स्वामिचरितचिन्तामणिः महाकाव्य में दशमहाविद्याओं के नाम व संक्षिप्त स्वरूप उपलब्ध होता है–

''तदस्याःदशरूपाणि काली तारा चषोडषी।

बगला भुवनेशी च धूमावती च भैरवी।।

छिन्नमस्ता च मातङ्गी कमला कथितानि च।''[5]

अर्थात् महाविद्या देवी के दशरूप कहे गए हैं, जिनके नाम– काली, तारा, षोडषी, बगला, भुवनेश्वरी, धूमावती, भैरवी, छिन्नमस्ता, मातङ्गी, कमला हैं।

नाम का उद्घाटन करने के पश्चात् अब उनका स्वरूप व बीजमन्त्र क्रमशः संक्षेप में वर्णित किया है। सर्वप्रथम काली महाविद्या के विषय में कहा गया है–

''ब्रह्मस्वरूपा किल या तु काली सा ब्रह्मरन्ध्रेत्वनुभूतिगम्या।

क्रीमिव्यतो बीजमिहास्ति देव्याः तस्याः स्वरूपन्तदिदञ्चविद्धि।।''[6]

वह काली महाविद्या ब्रह्मस्वरूपा, ब्रह्मरंध्रेत्वनुभूतिगम्या एवं क्रीं बीज मंत्र वाली है। क्रीं इस बीज मंत्र में क अक्षर सुभगा स्वरूप, रेफ समस्त वाची एवं बिन्दु मेलनस्वरूप है।[7]

काली महाविद्या के उपरान्त तारा महाविद्या के विषय में स्वामिचरितचिन्तामणिः महाकाव्य में उल्लेख है कि वह ताराविद्या–

''ब्रह्मावतारताराऽसौ वर्ण्यते ब्रह्मरूपिणी।

अस्याः मन्त्रस्वरूपञ्च ज्ञेयमेवावधानतः।।''[8]

यह तारा महाविद्या ब्रह्मअवतारा, ब्रह्मस्वरूपिणी एवं इसे सर्वतत्वस्वरूपिणी [9] कहा गया है। इसके मन्त्र का प्रथम अक्षर 'ओम' जो कि ब्रह्मरूपता सिद्ध करता है। 'ह्रीं' दूसरा वर्ण जिसका 'ह्' प्रकाशत्मा एवं रेफ अज्ञान का निवारण करने वाला है। अन्त का ई बिन्दु सहित तान्त्रिक है। तान्त्रिकों के मतानुसार 'ह्रीं' यहां ह्र और ई इन दोनों को मिलाने वाला बिन्दु ही है।[10]

अब छिन्नमस्ता नाम की जो महाविद्या है वह

''सा देवी छिन्नमस्ता तु महाकालस्य भक्षिणी।

एषा कालीस्वरूपैव सर्व–शक्ति–समन्विता।।''

भगवती छिन्नमस्ता महाकाल भक्षिणी, काली स्वरूपा एवं सर्व शक्ति समन्विता हैं।

चतुर्थ महाविद्या धूमावती हैं जो कि–

''धूमावती महाविद्या चतुर्थी तामसी मता।

शिवग्रासकरीदेवी साक्षाद् ब्रह्मस्वरूपिणी।।''[12]

तामसी हैं, शिवग्रास करी देवी, साक्षात् ब्रह्मस्वरूपिणी है। इसकी इसी अवस्था में ही शिव शक्ति में तिरोहित हैं। यह परावस्था प्रधानशक्ति[13] कुटिल, भयंकर और यमराज से भी अधिक भयंकर रूप वाली[14] शिव की पॉच शक्तियों में से एक पृथ्वी पर रहने वाली[15] सर्वथा विनाश कर देने वाली, धूमावती नाम से शक्ति स्वरूप प्रसिद्ध है।[16]

स्वामिचरित चिन्तामणिः महाकाव्य में षोडषी नामक महाविद्या का स्वरूप बताते हुए लिखा है–

''षोडषी वर्ण्यते सैव प्रोक्ता त्रिपुरसुन्दरी।

आगमेषु महाविद्या सैव श्रेष्ठेति कथ्यते।।''[17]

आगमों में श्रेष्ठ महाविद्या यही त्रिपुरसुन्दरी है। यह महाविद्या त्रिभुवन का रूप धारण करती है, इसको प्रजापति ने प्रजा से ही उत्पन्न किया है, ऐसी तीनों ज्योतियों का मिश्रित रूप ही षोडषी महाविद्या कहा गया है।[18] उसके समुदाय को पराविद्या तथा तांत्रिक इसे श्री विद्या कहते हैं।[19]

महाविद्या बगला स्तब्ध कर देने वाली है–

''संस्तम्भिनी महाविद्याबगलावल्गुविग्रहा।

त्रयोलोकाः ययास्तब्धास्ते तिष्ठन्ति यथास्थिति।।''[20]

यह बगला वल्गुविग्रहा है जिसने तीनों लोको को स्तब्ध किया है अतः तीनों लोक अपनी–अपनी धुरी पर यथास्थित हैं। वह बगला महाविद्या सर्वविध्ननिवारिणी संसार पारावारतारिणी है।[21] स्वहस्त–गदा–पाश–वज्र–मुद्गर शोभिता[22] त्रिनेता, पीतवसना सुवर्णासन संस्थिता, सुवर्णरूचिरा भाले, चन्द्रमुकुट शोभिता,[23] ब्रह्मशक्ति, ब्रह्मास्त्रविद्या, विष्णु की श्रेष्ठशक्ति विष्णुप्रिया, सुन्दर श्री व विष्णु की आभा[24] बगलामुखी महाविद्या व ब्रह्मस्वरूपिणी आदि नामों से विख्यात यह बगला महाविद्या है।[25]

अब बगला महाविद्या के अनन्तर भुवनेश्वरी महाविद्या का वर्णन है–

''उदीयमानार्कसमप्रभाम्विधोः सुधाकिरीटोच्चकुचान्त्रिलोचनाम्।

स्मिताननामङ्कुशपाशशोमिनीम् वरप्रदान्ताम्भुवनेष्वरीम्भजे।।''[26]

वह भूवनेश्वरी देवी जिसको मैं भजता हूँ। महाकवि शुक्लजी कहते हैं वह उदित होते हुए सूर्य के समान कान्तिवाली है, चन्द्रमा के सुधामय किरीट से उज्जवल तथा उन्नत कुचवाली, तीन नेत्रों वाली एवं मन्द–मन्द मुस्कान बिखेरती हुई अंकशु व पाश शोभिनी एवं वरप्रदायिनी है।

ह्रीं गूढ़ार्थ बीजमन्त्रवाली, चिन्तामणि नामवाली सरस्वती रूपा भुवनेष्वरी महाविद्या है।[27] 'ह्' इसका बीज है 'ई' शक्ति एवं 'र' कीलक है, इसके आगे व पीछे 'ओऽम्' सम्पुटित है। इस मन्त्र का ऋषि शक्ति एवं देवता गायत्री है। यह 'ह्रीं' मन्त्र बुद्धि व समृद्धि देने वाला है।[28]

आठवीं महाविद्या मातङ्गी जो कि कवित्व प्रदान करने वाली शक्ति एवं संगीत की देवता है–

''मधुरङ्गीयते देवी मातङ्गी तुङ्गवाक्करी।

कवित्वदायिनी शक्तिः सुङ्गीतस्यैकदेवता।।''[29]

ओऽम् ह्रीं क्लीं हूँ मातङ्गयै फट् स्वाहा'' इस मन्त्र को साधित करने पर संगीत की देवी मातङ्गी सिद्ध हो जाती है।[30] यह सर्वसिद्धिकरी देवी, केका, काकलिकण्ठदा[31] मातङ्गी महाविद्या है।

नौवीं महाविद्या जो कि प्रपच्चप्रसवा कमलामहाविद्या है–

''ओमैङ् ह्रीं श्रीं क्लीं ह्सौ रूपाम्प्रपच्चप्रसवान्तथा।

कमलाममलां देवीं सिद्धिर्हि भजताम्भवेत्।।''[32]

यह महाविद्या पाण्डित्य, कवित्व, धैर्य, धन और धाम को देने वाली है।[33] यह कांचनवंचना कान्तिवाली, रक्तोत्फुल्ल सरोजराजितवपुः, काम्य श्री कमला[34] महाविद्या है।

अन्तिम दसवीं महाविद्या भैरवी महाविद्या है–

''अथ त्रिपुरभैरवीमरूणमंशुकम्विभ्रतीं,।

सरोजसुरजः स्रजाम्मुकुटकोटिचन्द्रप्रभाम्।

सहस्ररविचण्डभान्त्रिनयनांस्तनस्रग्धराम्,

स्वहस्तधृतपुस्तकामहमपास्तभीतिम्भजे।।''[35]

यह महाविद्या रक्तवस्त्रधारिणी, परागसहित कमल की माला धारण करने वाली, चन्द्रकान्ति से जगमगाते हुए मुकुट को धारण करने वाली, सहस्त्र प्रचण्ड सूर्य की प्रभा वाली, तीन नेत्रों वाली, हाथ में पुस्तक धारण करने वाली, समस्त भय को दूर करने वाली त्रिपुर भैरवी महाविद्या है।

उपर्युक्त दशमहाविद्याओं के नाम व स्वरूप का वर्णन स्वामिचरितचिन्तामणिः महाकाव्य में पं. सुधाकर शुक्ल ने किया है जो कि शुद्ध विद्या कही गई है और वह विद्या गमनागमन के समुद्र से शीघ्र पार कराने वाली है–

''विद्याऽमृतं सर्वसुखाय लोकेवाञ्छत्यविद्यामिह बन्धदाङ्कः

विद्यैव सद्यः परिबोधनीया तर्तुन्त्वरन्तं गमनागमाब्धिम्।।''[36]

सन्दर्भ :–

1. कुलार्णव तन्त्र
2. कुल्लूक भट्ट
3. स्वामिचरितचिन्तामणिः – 15/6
4. स्वामि0 – 15/19
5. स्वामि0 – 15/16,17
6. स्वमि0 – 15/20
7. स्वामि0 – 15/21
8. स्वामि0 – 15/22
9. स्वामि0 – 15/24
10. स्वामि0 – 15/26
11. स्वामि0 – 15/27
12. स्वामि0 – 15/37
13. स्वामि0 – 15/38
14. स्वामि0 – 15/47
15. स्वामि0 – 15/48
16. स्वामि0 – 15/52
17. स्वामि0 – 15/53
18. स्वामि0 – 15/58
19. स्वामि0 – 15/59
20. स्वामि0 – 15/60
21. स्वामि0 – 15/61
22. स्वामि0 – 15/62
23. स्वामि0 – 15/63
24. स्वामि0 – 15/66

25. स्वामि0 – 15/72
26. स्वामि0 – 15/96
27. स्वामि0 – 15/97
28. स्वामि0 – 15/102
29. स्वामि0 – 15/103
30. स्वामि0 – 15/104
31. स्वामि0 – 15/106
32. स्वामि0 – 15/107
33. स्वामि0 – 15/109
34. स्वामि0 – 15/108
35. स्वामि0 – 15/110
36. स्वामि0 – 15/14